No of Questions : 30

No of Pages : 5

नामांक

माध्यमिक परीक्षा, 2019

हिन्दी

मॉडल पेपर 2

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड-अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

पहले खेल-कूद को लोग पढ़ाई में बाधा मानते थे। ऐसी मानसिकता सचमुच गलत थी। अब लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आया है। लोग जान चुके हैं कि पढ़ाई के साथ-साथ खेलों का भी जीवन में विशेष महत्व है। खेलों से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। उसमें चुस्ती और फुर्ती आती है। पसीना बह जाने से शरीर की गंदगी बाहर निकलती है और रक्त का संचार बढ़ जाता है। शरीर के साथ-साथ खेलों का बुद्धि पर भी प्रभाव पड़ता है। कहा भी गया है, स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। शिक्षा का उद्देश्य है- विद्यार्थी की बहुमुखी प्रतिभा का विकास करना। खेलें शिक्षा के इस उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक बनती हैं। खेल के मैदान में विद्यार्थी अनुशासन, समय का पालन, सहयोग, सहनशीलता, नेतृत्व, दृढ़ता, दल भावना आदि गुणों को सहज ही सीख जाता है। इन सब बातों को देखते हुए ही सरकार भी खिलाड़ियों को अधिकाधिक सुविधाएँ देने में प्रयासरत हैं।

1. इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

2. खेलों से हमारे शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है? 1

3. सरकार खिलाड़ियों के लिए क्या कर रही है? 2

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

कल-कल करते आज हाथ से निकले
सारे भूत भविष्य की चिंता में वर्तमान की बाजी हारे
हानि-लाभ के पलड़ों में तुलता जीवन का व्यापार
मोल लगा बिकने वाले का बिना बिका बेकार हो गया

www.rbse.online

www.rajteachers.com

भरी दुपहरी में अंधियारा सूरज परछाईं से हारा।
हर पड़ाव को समझने में फिर लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वर्तमान के मोहजाल में, आने वाला कल न भुलाएँ।
आओ फिर से दीया जलाएँ।

4. भूत एवं भविष्य की चिंता में हम किसे गँवा देते हैं? 1

5. **फिर से दीया जलाएँ** का क्या तात्पर्य है? 1

6. लोग लक्ष्य को प्राप्त क्यों नहीं कर पाते? 2

खण्ड–ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. मेरे जीवन का लक्ष्य
   (क) प्रस्तावना
   (ख) बाल्यावस्था की समस्या
   (ग) डॉक्टर बनने का उद्देश्य
   (घ) डॉक्टर का महत्व
2. होली
   (क) प्रस्तावना
   (ख) इतिहास
   (ग) कृषि का पर्व
   (घ) रंग का त्यौहार
   (ङ) कुप्रथा
   (च) उपसंहार
3. उपभोक्तावाद और भारतीय संस्कृति
   (क) प्रस्तावना
   (ख) पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव
   (ग) उपभोक्तावाद, उदारवाद और आर्थिक सुधार
   (घ) उपसंहार
4. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग
   (क) प्रस्तावना
   (ख) योग से आशय
   (ग) योग का महत्व
   (घ) वर्तमान में योग की स्थिति
   (ङ) उपसंहार

8. स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जोधपुर का छात्र रमेश मानकर अपने प्रधानाचार्य को शुल्क मुक्ति हेतु प्रार्थना-पत्र लिखिए। 4

अथवा

8. स्वयं को रजनीश निवासी जयपुर मानकर अपने क्षेत्र के विद्युत अभियन्ता को बोर्ड परीक्षा की तैयारी के कारण

www.rajteachers.com

विद्युत पूर्ति नियमित एवं पर्याप्त रूप से करवाने हेतु अनुरोध पत्र लिखिए। 4

खण्ड–स

9. **गोरा** को देखते ही मेरी पालने के सम्बन्ध में दुविधा निश्चय में बदल गई। रेखांकित में क्रिया कौन–सी हैं? 2

10. अपूर्ण भूत, पूर्ण भूत तथा हेतु–हेतुमद् भूत की परिभाषा लिखो तथा इन्हें उदाहरणों की सहायता से भली–भाँति समझाओ। 3

11. निम्नलिखित का समास कीजिए– 2
    1. नौरात्रियों का समूह
    2. शीत और आतप
    3. हाथ से लिखा हुआ
    4. चार मास का समाहार।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$
    1. जूही रैना और डेविड चिड़ियाघर घूमने गईं।
    2. तुम्हारे को राम ने क्या कहा था?

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$
    1. मन मोह लेना।
    2. कसर निकालना।

14. **जहाँ चाह, वहीं राह** लोकोक्ति का आशय लिखिए। 1

खण्ड–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार–बार मोहि लागि बोलावा।।
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेऊ कर घोरा।।
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू।।
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब यहु मरनिहार भा साँचा।।
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू।।
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही।।
उतर देत छोड़उँ बिनु मारें। केवल कौसिक सील तुम्हारें।।
न त एहि काटि कुठार कठोरें। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें।।
    गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि, मुनिहि हरिअरइ सूझ।
    अयमय खाँड न ऊखमय, अजहुँ न बूझ अबूझ।।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

कहेउ लखन मुनि सील तुम्हारा। को नहिं जान बिदित संसारा।।
माता पितहि उरिन भए नीकें। गुरु रिनु रहा सोचु बड़ जीकें।।

www.rbse.online

www.rajteachers.com

सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ा।।
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली।।
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।।
भृगुबर परसु देखावहु मोही। बिप्र बिचारि बचउँ नृपद्रोही।।
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े।।
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। रघुपति सयनहिं लखनु नेवारे।।
लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु।।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

इनसे भिन्न, पण्डित प्राणांतकप्रसाद भी प्रशंसनीय पुरुष हैं। जब तक इस घट में प्राण है तब तक न किसी पर इनकी प्रशंसा बन पड़ी, न बन पड़ेगी। ये महावैद्य के नाम से इस संसार में विख्यात हैं। चिकित्सा में ऐसे कुशल हैं कि चिता पर चढ़ते–चढ़ते रोगी इनके उपकार का गुण नहीं भूलता। कितना ही रोग से पीड़ित क्यों न हो, क्षण भर में स्वर्ग के सुख को प्राप्त होता है। जब तक औषधि नहीं देते केवल उसी समय तक प्राणी के संसारी विथा लगी रहती है।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

अब आप सब सज्जनों से यही प्रार्थना है कि आप अपने–अपने लड़कों को भेजें और व्यय आदि की कुछ चिंता न करें, क्योंकि प्रथम तो हम किसी अध्यापक को मासिक देंगे ही नहीं और दिया भी तो अभी दस–पाँच वर्ष पीछे देखा जायेगा। यदि हमको भोजन की श्रद्धा हुई तो भोजन का बन्धान बाँध देंगे, नहीं यह नियत कर देंगे कि जो पाठशाला सम्बन्धी द्रव्य हो उसका वे सब मिलकर नास लिया करें।

17. **लक्ष्मण–परशुराम संवाद** का कथासार अपने शब्दों में लिखिए। 6

अथवा

17. **लक्ष्मण–परशुराम संवाद** की भाषा की विशेषताएँ बताइए। 6

18. बच्चों में लालच एवं एक–दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ के साथ–साथ निश्छलता भी मौजूद होती है। कहानी से कोई दो प्रसंग चुनकर इस मत की पुष्टि कीजिए। 6

अथवा

18. **बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई।** इस कथन में **बूढ़े हामिद** और **बालिका अमीना** से लेखक का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए। 6

19. **तजि अंगार अघात** से क्या तात्पर्य है? 2

20. श्रीकृष्ण को **ब्रज–मन्दिर** का दीपक क्यों कहा गया है? 2

21. **अभी न होगा मेरा अन्त** कविता को पढ़ने के पश्चात् आप अपने जीवन में क्या–क्या परिवर्तन लाने का निश्चय करेंगे? 2

22. पुस्तक–लेखन के विचार पर लेखक क्यों सहम गया? 2

www.rajteachers.com

23. **अमर शहीद** एकांकी का मूल भाव एवं उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। 2

24. दादूदयाल की शिष्य–परम्परा पर संक्षेप में प्रकाश डालिए। 2

25. शिव–धनुष भंग होने पर कौन कुपित हुआ? 1

26. **मुनिहि हरिअरइ सूझ** पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। 1

27. हामिद की दादी का नाम क्या था? 1

28. जतिन किस चीज की पढ़ाई कर रहा था? 2

29. गोस्वामी तुलसीदास का परिचय संक्षेप में लिखिए। 4

30. कथाकार के रूप में प्रेमचन्द की साहित्यिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। 4

□□□□□□□

www.rbse.online
www.rajteachers.com

राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019
10वीं कक्षा
हिन्दी
मॉडल पेपर 2

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड-अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

पहले खेल-कूद को लोग पढ़ाई में बाधा मानते थे। ऐसी मानसिकता सचमुच गलत थी। अब लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आया है। लोग जान चुके हैं कि पढ़ाई के साथ-साथ खेलों का भी जीवन में विशेष महत्व है। खेलों से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। उसमें चुस्ती और फुर्ती आती है। पसीना बह जाने से शरीर की गंदगी बाहर निकलती है और रक्त का संचार बढ़ जाता है। शरीर के साथ-साथ खेलों का बुद्धि पर भी प्रभाव पड़ता है। कहा भी गया है, स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। शिक्षा का उद्देश्य है- विद्यार्थी की बहुमुखी प्रतिभा का विकास करना। खेलें शिक्षा के इस उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक बनती हैं। खेल के मैदान में विद्यार्थी अनुशासन, समय का पालन, सहयोग, सहनशीलता, नेतृत्व, दृढ़ता, दल भावना आदि गुणों को सहज ही सीख जाता है। इन सब बातों को देखते हुए ही सरकार भी खिलाड़ियों को अधिकाधिक सुविधाएँ देने में प्रयासरत हैं।

1. इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर :
इस गद्यांश का उचित शीर्षक खेलों का महत्व है।

2. खेलों से हमारे शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है? 1

उत्तर :
खेलों से शरीर मजबूत एवं स्वस्थ बनता है तथा उसमें चुस्ती और फुर्ती आती है।

3. सरकार खिलाड़ियों के लिए क्या कर रही है? 2

उत्तर :
सरकार खिलाड़ियों को अधिक-से-अधिक सुविधाएँ देने का प्रयास कर रही है।

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

कल-कल करते आज हाथ से निकले
सारे भूत भविष्य की चिंता में वर्तमान की बाजी हारे
हानि-लाभ के पलड़ों में तुलता जीवन का व्यापार
मोल लगा बिकने वाले का बिना बिका बेकार हो गया
भरी दुपहरी में अंधियारा सूरज परछाईं से हारा।
हर पड़ाव को समझने में फिर लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वर्तमान के मोहजाल में, आने वाला कल न भुलाएँ।
आओ फिर से दीया जलाएँ।

4. भूत एवं भविष्य की चिंता में हम किसे गँवा देते हैं? 1

उत्तर :
भूत एवं भविष्य की चिंता में हम वर्तमान को गँवा देते हैं।

5. **फिर से दीया जलाएँ** का क्या तात्पर्य है? 1

उत्तर :
फिर से दीया जलाएँ का तात्पर्य फिर से लक्ष्य प्राप्ति का प्रयास करें है।

6. लोग लक्ष्य को प्राप्त क्यों नहीं कर पाते? 2

उत्तर :
लोग कष्ट सहने की शक्ति नहीं रखते, इसलिए लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते।

खण्ड-ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. मेरे जीवन का लक्ष्य
   (क) प्रस्तावना
   (ख) बाल्यावस्था की समस्या

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

(ग) डॉक्टर बनने का उद्देश्य
(घ) डॉक्टर का महत्व

2. होली
(क) प्रस्तावना
(ख) इतिहास
(ग) कृषि का पर्व
(घ) रंग का त्यौहार
(ङ) कुप्रथा
(च) उपसंहार

3. उपभोक्तावाद और भारतीय संस्कृति
(क) प्रस्तावना
(ख) पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव
(ग) उपभोक्तावाद, उदारवाद और आर्थिक सुधार
(घ) उपसंहार

4. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग
(क) प्रस्तावना
(ख) योग से आशय
(ग) योग का महत्व
(घ) वर्तमान में योग की स्थिति
(ङ) उपसंहार

उत्तर :

1. मेरे जीवन का लक्ष्य

1. **प्रस्तावना –** मानव का प्रत्येक कार्य उद्देश्यपूर्ण होता है। एक मूर्ख व्यक्ति भी बिना उद्देश्य निर्धारित किए काम नहीं करता। अतः प्रत्येक व्यक्ति कोई–न–कोई लक्ष्य सामने रखकर काम करता है। हमारा जीवन एक यात्रा के समान है। यदि यात्री को मालूम हो कि उसे कहाँ जाना है, तो वह उस लक्ष्य की ओर बढ़ना प्रारम्भ कर देता है। किन्तु अगर उसे अपने गन्तव्य का ज्ञान नहीं है तो उसकी यात्रा निरर्थक बन जाती है। इसी प्रकार से अगर एक विद्यार्थी को यह पता हो कि उसे जीवन में क्या बनना है तो वह उसी दिशा में प्रयत्न करता है और सफलता भी प्राप्त करता है। इसके विपरीत, उद्देश्यहीन जीवन उसे कहीं नहीं ले जाता।
2. **बाल्यावस्था की समस्या –** जब बालक प्रारम्भ में विद्यालय में प्रवेश करता है तो उसके सामने विभिन्न लक्ष्य होते हैं। वह जैसे–जैसे लोगों के सम्पर्क में आता है, वैसे–वैसे प्रभाव उस पर पड़ते हैं। कभी तो वह सोचता है कि वह अध्यापक बने या डॉक्टर अथवा इंजीनियर बने तो कभी वह सैनिक बनकर देश की सेवा करना चाहता है। माँ–बाप भी बार–बार कहते रहते हैं कि वे अपने बच्चे को यह बनाएंगे या वह बनाएंगे, लेकिन निर्णय तो विद्यार्थी को स्वयं लेना होता है। अतः माँ–बाप के द्वारा कोई भी लक्ष्य बच्चे पर थोपा नहीं जाना चाहिए। विद्यार्थीकाल मानव के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह मानव–जीवन की आधार–शिला है। अगर विद्यार्थी इस काल में अपने लिए सही लक्ष्य निर्धारित कर लेता है, तो वह अपने जीवन को सफल बनाता है और अपने देश तथा समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।
3. **डॉक्टर बनने का उद्देश्य –** हमारे प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ भी यह कहते हैं कि दो व्यक्तियों का समाज पर अत्यधिक उपकार है–पहला है शिक्षक, जो विद्यार्थियों के जीवन में अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करके ज्ञान का प्रकाश करता है और दूसरा है डॉक्टर अथवा वैद्य, जो रोगी का उपचार करके उसे नया जीवन प्रदान करता है। अतः शिक्षा देना और रोगियों का उपचार करना दोनों ही श्रेष्ठ कर्म हैं और मैंने इनमें से एक श्रेष्ठ कार्य को जीवन का लक्ष्य चुना है। हमारे देश में जो लोग डॉक्टरी की परीक्षा पास करते हैं, वे या तो बड़े–बड़े नगरों में अपने क्लीनिक स्थापित करके धन बटोरना शुरू कर देते हैं या फिर विदेशों की ओर भागते हैं। मेरा मानना है कि यह मातृ–भूमि के प्रति अन्याय तथा अपने देश और उसके प्रति विश्वासघात है।
4. **डॉक्टर का महत्व –** मैं चाहता हूँ कि मैं शहर से दूर गाँव में जाकर अपना एक छोटा–सा अस्पताल स्थापित करूँ ताकि गाँव के लोगों को रोगों से मुक्त होने की सुविधा प्राप्त हो। मैं रोगियों से उतनी ही फीस लूँगा, जिससे कि अस्पताल का काम सुचारू रूप से चल सके। गरीब और अभावग्रस्त रोगियों का मैं मुफ्त इलाज करूँगा। मैं स्वयं एक गाँव का निवासी हूँ। मैंने अनेक बार गाँव के रोगियों को दवाई और इलाज के अभाव में मरते देखा है। अतः मैं चाहता हूँ कि डॉक्टरी द्वारा गाँव के उन लोगों की सेवा की जा सके जो न तो बड़े डॉक्टरों की अधिक फीस दे सकते हैं और न ही मरीज को बड़े–बड़े शहरों में ले जा सकते हैं। इसलिए मेरा मानना है कि ग्रामीण क्षेत्र में डॉक्टरों की अत्यधिक आवश्यकता है। मैं जानता हूँ कि एक अच्छा और सफल डॉक्टर बनना सरल नहीं है। यह बहुत ही कठिन कार्य है। डॉक्टर के हृदय में मरीजों के प्रति दया, सहानुभूति और करुणा की भावना का होना अत्यन्त आवश्यक है। मैंने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अभी से प्रयत्न शुरू कर दिए हैं। मेरे माता–पिता का विश्वास भी मुझे प्राप्त है। वे भी यही चाहते हैं कि मैं डॉक्टर बनूँ। वस्तुतः मैं सही अर्थों में डॉक्टर बनकर उन डॉक्टरों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता हूँ जो मरीजों से रुपया कमाने के लिए इस व्यवसाय को अपनाए हुए हैं। मैं आशा करता हूँ कि डॉक्टर बनकर मैं अपने देश और समाज की सच्ची सेवा कर सकूँगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह मेरी इस मनोकामना को पूर्ण करे।

2. होली

1. **प्रस्तावना –** हमारा देश त्यौहारों और पर्वों का देश है। यहाँ हर वर्ष अनेक त्यौहर मनाए जाते हैं। रक्षाबन्धन, दीपावली, दशहरा, होली आदि यहाँ के प्रसिद्ध त्यौहार हैं। अन्य पर्वों की भाँति होली भी भारत का मुख्य पर्व है। यह भारतीय जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। यह त्यौहार फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। यह त्यौहार समाज की एकता, मेल–जोल और प्रेम भावना का प्रतीक माना जाता है।
2. **इतिहास –** होली के त्यौहार का इतिहास बहुत प्राचीन है। इसका सम्बन्ध राजा हिरण्यकश्यप से है। हिरण्यकश्यप निर्दयी और नास्तिक राजा था। वह अपने–आपको भगवान् मानता था तथा चाहता था कि प्रजा उसे परमात्मा से भी बढ़कर समझे तथा उसकी पूजा करे। उसके पुत्र एवं ईश्वर–भक्त प्रहलाद ने उसका विरोध किया। इस पर क्रोधित होकर उसने उसे मार डालने का प्रयत्न किया। हिरण्यकश्यप की होलिका नामक एक बहन थी। उसे वरदान प्राप्त था कि अग्नि उसके शरीर को जला नहीं सकती। लकड़ियों के एक ढेर पर होलिका प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर बैठ गई और फिर लकड़ी के ढेर को आग लगा दी गई। होलिका जलकर राख हो गई पर प्रहलाद वैसे ही बैठा रहा। इसलिए लोग

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

इस घटना को याद करके होली मनाते हैं।

3. **कृषि का पर्व –** होली का त्योहार मनाने का एक और कारण भी है। भारत देश कृषि प्रधान देश है। फरवरी और मार्च के महीने में गेहूँ और चने के दाने अधपके हो जाते हैं। इनको देखकर किसान खुशी से झूम उठता है। अग्नि देवता को प्रसन्न करने के लिए वह गेहूँ के बालों की अग्नि में आहुति देता है।
4. **रंग का त्यौहार –** होली को रंगों का त्यौहार भी कहा जाता है, क्योंकि इस दिन लोग रंग, गुलाल, अबीर आदि से त्यौहार मनाते हैं। लोग एक–दूसरे पर रंग डालते हैं तथा एक–दूसरे के चेहरे पर गुलाल लगाते हैं। इस अवसर पर लोगों के चेहरे एवं वस्त्र रंग–बिरंगे हो जाते हैं। चारों ओर उल्लास का वातावरण छा जाता है। वास्तव में यह त्यौहार कई दिन पूर्व ही प्रारम्भ हो जाता है।
   यह त्यौहार परस्पर भाई–चारे और प्रेम–भाव का त्योहार है। इस अवसर पर कई लोग रात को लकड़ियाँ जलाकर होली की पूजा करते हैं। उसके बाद गाना–बजाना करते हैं।
   कविवर मैथिलीशरण गुप्त का कथन है–
   काली–काली कोयल बोली होली, होली, होली,
   फूटा यौवन फाड़ प्रकृति की पीली–पीली चोली।
5. **कुप्रथा –** इस पावन त्यौहार पर कुछ लोग एक–दूसरे पर मिट्‌टी, कीचड़, पानी आदि फैंकते हैं। यह उचित काम नहीं है। इससे किसी भी पर्व का महत्व कम हो जाता है। ऐसा करने से कभी–कभी लड़ाई–झगड़े तक हो जाते हैं तथा शत्रुता की भावना जन्म ले लेती है। कुछ लोग इस त्यौहार पर शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। इन सब बुराइयों के कारण ऐसे शुभ त्योहार अपने सच्चे महत्व एवं अर्थ को खो देते हैं। अतः यह आवश्यक है कि हम हर त्यौहार को उचित तरीके से मनाएँ। हमें उसके महत्व को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।
6. **उपसंहार –** सार रूप में कहा जा सकता है कि होली एक उल्लास एवं मस्ती भरा त्यौहार है। यह प्रकृति एवं कृषि का त्यौहार है। हमें इसके महत्व को समझना चाहिए तथा इसकी रक्षा करनी चाहिए। इस पर्व पर गोष्ठियों का आयोजन करके हमें समाज को एकता और प्रेम का संकेत देना चाहिए।

3. उपभोक्तावाद और भारतीय संस्कृति

1. **प्रस्तावना –** उपभोक्तावाद एक ऐसी आर्थिक प्रक्रिया है, जिसका सीधा अर्थ है समाज के भीतर व्याप्त प्रत्येक तत्व उपभोग करने योग्य हो। बस उसे उचित तरीके से एक जरूरी वस्तु के रूप में स्थापित करने की आवश्यकता हैं। उसको खरीदने और बेचने वाले लोग स्वतः ही मिल जाएंगे, क्योंकि मानव मस्तिष्क चीजों को बहुत जल्दी ग्रहण कर लेता है।
2. **पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव –** पाश्चात्य संस्कृति ने भारतीय जनमानस को विशेष रूप से युवाओं को अपनी गिरफ्त में ले लिया हैं। बाजारवाद की बाढ़ में नैतिक मूल्य बह गए हैं। इंसानियत लुप्त–सी होने लगी है। अमीर बनने की लालसा में खाद्य व पेय पदार्थों में मिलावट, कालाबाजारी, घूसखोरी, अपहरण जैसे अपराधों में बढ़ोत्तरी हो रही है। भारतीय संस्कृति के लोग, पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे है। वहाँ के रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा आदि की नकल करके उसी रंग–रूप में ढलते जा रहे हैं, जो कि भारतीय संस्कृति के लिए विनाशक तत्व है।
3. **उपभोक्तावाद, उदारवाद और आर्थिक सुधार –** 1991 में भारतीय सरकार ने महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार प्रस्तुत किए, जो इस दृष्टि से वृहद् प्रयास थे। इनमें विदेशी व्यापार, उदारीकरण, कर सुधार और विदेशी निवेश के प्रति आग्रह शामिल था। इन उपायों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने में मदद की। इससे भारतीय उपभोक्तावाद, उदारवाद तथा आर्थिक नीति में विभिन्न सुधार हुए।
4. **उपसंहार –** भारतीय संस्कृति में इतने महान् तत्व होते हुए भी आज स्थिति विपरीत है। आज अध्यात्म की जगह प्रखर भोगवाद का बोलबाला है। अध्यात्म के केन्द्र सुविधा के अड्डे बन गए हैं। समन्वय का स्थान अब अलगाववाद लेता जा रहा है। आरक्षण और चुनाव के आधार पर जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है। सब धर्म, मत, संप्रदाय अपनी अलग पहचान बनाने को आतुर हो रहे हैं। वर्ण–व्यवस्था ने घृणित रूप धारण कर लिया है। चतुर्वर्गों में कोई भी वर्ग **धर्म** की परवाह नहीं करता। सभी **अर्थ** और **काम** की नंगी यात्रा कर रहे हैं। यह सब पाश्चात्य संस्कृति का कुप्रभाव है। आज संस्कृति के मापदंड केवल शब्दों तक ही रह गए हैं, व्यवहार में कहीं नहीं दिखते। यदि भारत को पुनः उन्नति के शिखर पर आसीन करना है तो हमें अपने असली सांस्कृतिक स्वरूप को पहचानना होगा। वरना भारत की हस्ती भी जल्दी ही धूलधूसरित हो जाएगी।

4. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग

1. **प्रस्तावना –** हमारा देश भारत प्राचीन काल से ही ऋषियों, मुनियों और मनीषियों की भूमि रहा है। इसीलिए भारतीय संस्कृति विश्व के इतिहास में अपनी श्रेष्ठताओं और महानताओं के लिए प्रसिद्ध रही है। इसके मूल में सभी के सुख से जीवन यापन करने की भावना निहित है। इस कारण हमारे ऋषियों, मुनियों और मनीषियों ने मानव–जीवन को सुखी बनाने के लिए अनेक उपाय किए हैं। इन उपायों में से एक उपाय है–योग। योग मानव–जाति के लिए भारतीय संस्कृति का अनमोल उपहार है।
2. **योग से आशय – योग** शब्द संस्कृत के **युज्** धातु से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है–जोड़ना। किसी वस्तु को स्वयं से जोड़ना अर्थात् किसी अच्छे कार्य में अपने आपको लगाना। कार्य शारीरिक, मानसिक, धार्मिक और आध्यात्मिक अनेक प्रकार के हो सकते हैं। मन और शरीर से जो कार्य किया जायेगा, उसे ही योग कहते हैं। महर्षि पतंजलि द्वारा रचित **योगसूत्र** योगदर्शन का मूलग्रन्थ है। उन्होंने योग के आठ अंग बताते हुए कहा है कि चित्त की वृत्तियों को रोकना ही योग है। अतः हमें शारीरिक, मानसिक, धार्मिक व आध्यात्मिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए योग की कोई न कोई क्रिया पन्द्रह–बीस मिनट नियमित रूप से करनी चाहिए।
3. **योग का महत्व –** योग से मनुष्य को शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक रूप से अनेक लाभ हैं। इससे सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसको प्रतिदिन करने से व्यक्ति रोगों से मुक्त रहता है। वह लंबी आयु का होता है। उसके शरीर और मस्तिष्क में वृद्धि के साथ–साथ सोचने–समझने की क्षमता भी बढ़ती है।
4. **वर्तमान में योग की स्थिति –** आज योग शब्द से कोई अनभिज्ञ नहीं रहा है, क्योंकि जहाँ देखो वहीं योग का प्रचार–प्रसार विभिन्न माध्यमों से हो रहा है। साथ ही विभिन्न संस्थाएँ हैं, जो योग सिखा रही हैं। असाध्य रोगों का प्राकृतिक इलाज योग है, इसीलिए कहा गया है कि **योग भगाए रोग** क्योंकि आज का मनुष्य अनियमित

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

दिनचर्या के कारण विभिन्न शारीरिक और मानसिक बीमारियों से ग्रस्त है। वह इन बीमारियों से मुक्त रहने के लिए योग का सहारा लेने लगा है। योग के क्षेत्र में स्वामी रामदेव का योगदान वर्तमान में अतुलनीय है। उन्होंने देश और विदेशों में सैकड़ों योग–शिविर लगाकर लोगों को स्वस्थ और दीर्घजीवी रहने का सरल उपाय सिखाया है। उन्होंने हरिद्वार में **पतंजलि योगपीठ** की स्थापना करके योग द्वारा रोगों की चिकित्सा का भी प्रबन्ध किया है। वर्तमान में योग की महत्ता को समझते हुए हमारे देश की कई प्रादेशिक सरकारों ने इसे शिक्षा पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने का प्रयास किया है और कई सरकारों ने इसे प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रमों में अनिवार्यता प्रदान की है।

5. **उपसंहार –** योग भारतीय संस्कृति का एक विशिष्ट उपहार है। जो आज के मनुष्य के व्यस्त और तनावग्रस्त जीवन की एक अनमोल औषधि है। योग स्वास्थ्य की कुंजी है। इसके नियमित अभ्यास से मनुष्य सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा पूरी कर लेता है। इसीलिए वर्तमान में सभी के लिए योग लाभदायक सिद्ध हो रहा है और इसका प्रचार–प्रसार प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

8. स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जोधपुर का छात्र रमेश मानकर अपने प्रधानाचार्य को शुल्क मुक्ति हेतु प्रार्थना–पत्र लिखिए। 4

उत्तर :

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

जोधपुर।

विषय : शुल्क मुक्ति हेतु प्रार्थना–पत्र

महोदय,

निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा दस का छात्र हूँ और कक्षा छः से इसी विद्यालय में निरन्तर पढ़ता आ रहा हूँ। मैं अपनी सभी कक्षाओं में प्रथम आता रहा हूँ।

मेरे पिताजी की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। इस वर्ष अकाल के कारण हमारे खेतों में अनाज का एक दाना भी पैदा नहीं हुआ। हमारे परिवार का जीवन–निर्वाह भी अत्यधिक कठिनाई से हो रहा है। परिवार में मेरे दो बहिन–भाई और भी हैं, वे भी पढ़ रहे हैं। अपने परिवार में सबसे बड़ी संतान होने के कारण मेरी पढ़ाई भविष्य के लिए आवश्यक है, परन्तु मेरे पिताजी हमारी पढ़ाई का खर्च वहन करने में समर्थ नहीं हैं।

अतः प्रार्थना है कि मुझे विद्यालय के पूर्ण शिक्षण–शुल्क से मुक्ति प्रदान करें, जिससे मैं अपना अध्ययन जारी रख सकूँ।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक लाकर विद्यालय का नाम रोशन करूँगा।

आपकी इस कृपा के लिए मैं सदैव आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

रमेश

दिनांक : 15 सितम्बर, 2018 कक्षा–10

अथवा

8. स्वयं को रजनीश निवासी जयपुर मानकर अपने क्षेत्र के विद्युत अभियन्ता को बोर्ड परीक्षा की तैयारी के कारण विद्युत पूर्ति नियमित एवं पर्याप्त रूप से करवाने हेतु अनुरोध पत्र लिखिए। 4

उत्तर :

प्रतिष्ठा में,

विद्युत अभियन्ता महोदय,

विद्युत विभाग,

जयपुर।

विषय : बोर्ड परीक्षा की तैयारी के लिए विद्युत पूर्ति नियमित एवं पर्याप्त रूप से करवाने के सम्बन्ध में।

मान्यवर,

उपर्युक्त विषय में निवेदन है कि हमारे क्षेत्र में बिजली की अनियमितता के कारण अत्यधिक परेशानी हो रही है। जैसा कि आप जानते हैं कि बोर्ड परीक्षाएँ मार्च माह में होती हैं और फरवरी मध्य से लेकर मार्च के अन्त तक का समय हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होता हैं। हमारे वर्षभर की मेहनत इन्हीं दिनों की पढ़ाई पर निर्भर करती है। इन दिनों बिजली बार–बार आती–जाती रहती है, इस कारण हमारी पढ़ाई प्रभावित हो रही है।

अतः आपसे अनुरोध है कि बोर्ड परीक्षा नजदीक होने के कारण परीक्षा तैयारी को ध्यान में रखते हुए बिजली की पूर्ति नियमित एवं पर्याप्त रूप से करवाने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

प्रार्थी/निवेदक,

(हस्ताक्षर ....)

दिनांक : 05 फरवरी, 2019 रजनीश,

जयपुर।

खण्ड–स

9. **गोरा** को देखते ही मेरी पालने के सम्बन्ध में दुविधा निश्चय में बदल गई। रेखांकित में क्रिया कौन–सी हैं? 2

उत्तर :

देखते ही – यह तात्कालिक क्रिया है।

10. अपूर्ण भूत, पूर्ण भूत तथा हेतु–हेतुमद् भूत की परिभाषा लिखो तथा इन्हें उदाहरणों की सहायता से भली–भाँति समझाओ। 3

उत्तर :

1. **अपूर्ण भूत –** क्रिया के जिस रूप से भूतकाल में उसके समाप्त होने का पता न चले। जैसे– प्रदर्शनी चल रही थी।
2. **पूर्ण भूत –** क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल समाप्त हो जाने का बोध हो। जैसे–नेहा कक्षा में अव्वल आई।
3. **हेतु–हेतुमद् भूत –** क्रिया के जिस रूप से भूतकाल की किसी एक क्रिया का होना या न होना किसी दूसरी क्रिया पर निर्भर हो। जैसे– यदि समय पर डॉक्टर आ जाता तो मरीज बच जाता।

11. निम्नलिखित का समास कीजिए– 2

1. नौरात्रियों का समूह
2. शीत और आतप
3. हाथ से लिखा हुआ

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

4. चार मास का समाहार।

उत्तर :

1. नवरात्र/नवरात्रि
2. शीतातप
3. हस्तलिखित
4. चौमासा/चतुर्मास।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. जूही रैना और डेविड चिड़ियाघर घूमने गईं।
2. तुम्हारे को राम ने क्या कहा था?

उत्तर :

1. जूही, रैना और डेविड चिड़ियाघर घूमने गए।
2. तुम्हें राम ने क्या कहा था?

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. मन मोह लेना।
2. कसर निकालना।

उत्तर :

1. **मन मोह लेना :**
   अर्थ – आकर्षित करना
   वाक्य में प्रयोग – लाख की सुंदर चूड़ियाँ सबका मन मोह लेती हैं।
2. **कसर निकालना :**
   अर्थ – कमी पूरी करना
   वाक्य में प्रयोग – छोटे-छोटे दुकानदार मेले-त्यौहारों पर वस्तुओं को अधिक दामों में बेचकर कसर निकाल लेते हैं।

14. **जहाँ चाह, वहीं राह** लोकोक्ति का आशय लिखिए। 1

उत्तर :

अपनी इच्छानुसार कार्य करना।

खण्ड-द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार-बार मोहि लागि बोलावा।।
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेऊ कर घोरा।।
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू।।
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब यहु मरनिहार भा साँचा।।
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू।।
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही।।
उतर देत छोड़उँ बिनु मारें। केवल कौसिक सील तुम्हारें।।
न त एहि काटि कुठार कठोरें। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें।।
गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि, मुनिहि हरिअरइ सूझ।
अयमय खाँड न ऊखमय, अजहुँ न बूझ अबूझ।।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश महाकवि तुलसीदास के **रामचरितमानस** से संकलित **लक्ष्मण-परशुराम संवाद** से लिया गया है। इसमें परशुराम एवं विश्वामित्र के संवाद का वर्णन प्रसंगानुसार किया गया है।

व्याख्या– लक्ष्मण ने परशुराम से कहा कि आप तो मानो मृत्यु को हाँक लगा-लगाकर अर्थात् बार-बार आवाज दे-देकर मेरे लिए बुला रहे हैं। लक्ष्मण की कटु बातें सुनकर परशुराम ने अपने फरसे को सँभालकर हाथ में ले लिया और कहने लगे कि अब मुझे इस बालक के वध के लिए कोई दोषी मत ठहराना, क्योंकि यह बालक कटु वचन कहने के कारण वध के योग्य है। मैं तो इसे बालक समझकर अब तक बहुत बचाता रहा, परन्तु अब यह सत्य ही मारने योग्य हो चुका है।

यह सुनकर विश्वामित्र ने परशुराम से कहा-हे मुनिवर! आप तो साधु हैं, साधुजन बालकों के गुण-दोषों पर अधिक ध्यान नहीं देते, इसलिए आप इसे क्षमा कर दीजिए। तब परशुराम ने कहा-हे विश्वामित्रजी! आप जानते हैं कि मैं बहुत क्रोधी स्वभाव का हूँ। मेरे हाथों में यह कुल्हाड़ा भी है, मेरे सामने मेरे गुरु (शिवजी) का अपमान करने वाला अपराधी भी खड़ा है। यह बार-बार उत्तर-पर-उत्तर दिये जा रहा है। इतना होने पर भी यदि मैं इसे नहीं मार रहा हूँ, तो केवल तुम्हारे प्रेम एवं सद्व्यवहार के कारण, नहीं तो अब तक मैं इसे कुल्हाड़े से काटकर थोड़े से ही श्रम से गुरु-ऋण से उऋण हो गया होता।

परशुराम की बातें सुनकर विश्वामित्र अपने मन में हँसे और सोचने लगे कि देखो मुनि परशुराम को कैसा हरा-ही-हरा सूझ रहा है, अर्थात् सभी क्षत्रियों को हराने के कारण राम-लक्ष्मण को हरा देना अत्यधिक सरल मान रहे हैं, इन्हें सामान्य क्षत्रिय समझने की गलती कर रहे हैं। ये इस बात से अभी तक परिचित नहीं हैं कि उनके सामने गन्ने के रस से बनी हुई खाँड नहीं, बल्कि लोहे से बना हुआ तेज खांडा (तलवार) है। अर्थात् राम-लक्ष्मण सामान्य योद्धा ना होकर महापराक्रमी हैं, परन्तु परशुराम अभी तक इनके प्रभाव को नहीं समझ पा रहे हैं।

विशेष–

1. इसमें परशुराम के बड़बोलेपन तथा नासमझी की सुन्दर व्यंजना की गई है। साथ ही राम-लक्ष्मण की विशिष्टता बतायी गई है।
2. संवाद पात्रानुसार एवं प्रखर है। अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, परिकर आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
3. अवधी भाषा की कोमलता एवं चौपाई-दोहा छन्द की गति-यति सुन्दर है।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

कहेउ लखन मुनि सील तुम्हारा। को नहिं जान बिदित संसारा।।
माता पितहि उरिन भए नीकें। गुरु रिनु रहा सोचु बड़ जीकें।।
सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ा।।
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली।।
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।।
भृगुबर परसु देखावहु मोही। बिप्र बिचारि बचउँ नृपद्रोही।।
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े।।
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। रघुपति सयनहिं लखनु नेवारे।।
लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु।।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरितमानस के बालकाण्ड से लक्ष्मण-परशुराम संवाद शीर्षक से लिया गया है। इसमें परशुराम को लक्ष्य कर लक्ष्मण ने जो कुछ कहा, उसका वर्णन किया गया है।

व्याख्या– लक्ष्मण ने परशुराम से कहा-हे मुनि! आपके शील स्वभाव के बारे में कौन नहीं जानता? यह सारा संसार आपसे परिचित है। आप

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

अपने माता-पिता के ऋण से तो भली-भांति ऋणमुक्त हो चुके हैं। इसलिए अब आप पर गुरु का ऋण ही शेष रहा है। अब तक तो आप पर गुरु-ऋण का ब्याज बहुत बढ़ गया होगा। इसलिए अब किसी हिसाब-किताब करने वाले को बुला लीजिए। मैं तुरन्त अपनी थैली खोलकर ब्याज चुका दूँगा। लक्ष्मण के द्वारा कहे गये कटु वचनों को सुनकर परशुराम ने अपना फरसा साध लिया। सारी स्वयंवर सभा में हाय-हाय की पुकार गूँजने लगी। लक्ष्मण ने फिर से कहा-हे भृगुवर! परशुरामजी! आप मुझे अपना फरसा दिखा रहे हो और मैं आपको ब्राह्मण समझकर लड़ने से बच रहा हूँ। हे ब्राह्मण देवता शत्रु! लगता है कि आपका युद्ध-भूमि में कभी पराक्रमी वीरों से पाला नहीं पड़ा। इसलिए हे क्षत्रियों के शत्रु! आप अपने घर में ही अपने पराक्रम के कारण फूले-फूले फिर रहे हो। लक्ष्मण के ऐसे कठोर वचन सुनकर सभा में उपस्थित लोग "अनुचित है, यह अनुचित है" ऐसा कहने लगे। राम ने भी अपने आँखों के संकेत से लक्ष्मण को बोलने से मना किया।

विशेष-

1. लक्ष्मण के व्यंग्य-वचनों से परशुराम के क्रोध के आवेश की वृद्धि हुई, जिसे राम ने अपने शीतल वचनों से शान्त किया।
2. इसमें पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ बताई गई हैं।
3. अनुप्रास, आक्षेप, परिकर एवं उपमा अलंकारों का प्रयोग हुआ हैं।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- 6

इनसे भिन्न, पण्डित प्राणांतकप्रसाद भी प्रशंसनीय पुरुष हैं। जब तक इस घट में प्राण है तब तक न किसी पर इनकी प्रशंसा बन पड़ी, न बन पड़ेगी। ये महावैद्य के नाम से इस संसार में विख्यात हैं। चिकित्सा में ऐसे कुशल हैं कि चिता पर चढ़ते-चढ़ते रोगी इनके उपकार का गुण नहीं भूलता। कितना ही रोग से पीड़ित क्यों न हो, क्षण भर में स्वर्ग के सुख को प्राप्त होता है। जब तक औषधि नहीं देते केवल उसी समय तक प्राणी के संसारी विथा लगी रहती है।

उत्तर :

सन्दर्भ एवं प्रसंग- प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित **एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न** शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक प्रसिद्ध गद्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं।

लेखक ने सपने में एक अनुपम पाठशाला का निर्माण कराया। उसमें अनेक विद्वान पण्डितों को अध्यापक नियुक्त किया। मुग्धमणि शास्त्री तथा पाखण्डप्रिय इस विद्यालय के शिक्षक हैं।

व्याख्या- लेखक कहता है कि पण्डित प्राणान्तक प्रसाद भी इस पाठशाला के प्रखर शिक्षक हैं। जब तक किसी मनुष्य के शरीर में जीवन है तब तक न तो कोई इनकी प्रशंसा कर सका है और न कोई कर सकेगा। सम्पूर्ण जगत में ये महावैद्य के नाम से प्रसिद्ध हैं। रोगी का इलाज करने में ये अत्यधिक कुशल है। चिता पर चढ़ते हुए भी रोगी इनके द्वारा किए गए उपकार को नहीं भुला पाता। कोई मनुष्य कितने भी गंभीर रोग से पीड़ित क्यों न हो, इनका उपचार प्रारम्भ होते ही क्षणभर में वह स्वर्गवासी होने का सुख प्राप्त कर लेता है। जब तक रोगी को इनकी दवा नहीं मिलती, तब तक ही उसको संसार के कष्ट सहने पड़ते हैं। दवा मिलते ही वह कष्टों से मुक्त होकर स्वर्ग का सुख प्राप्त कर लेता है।

विशेष-

1. लेखक की पाठशाला के विद्वान पंडितों में प्राणान्तक प्रसाद प्रशंसनीय अध्यापक हैं।
2. लेखक ने प्राणान्तक प्रसाद के रूप में अकुशल डॉक्टर-वैद्यों पर व्यंग्य-प्रहार किया है।
3. भाषा सरल और सुबोध है। शैली व्यंग्य प्रधान है।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- 6

अब आप सब सज्जनों से यही प्रार्थना है कि आप अपने-अपने लड़कों को भेजें और व्यय आदि की कुछ चिंता न करें, क्योंकि प्रथम तो हम किसी अध्यापक को मासिक देंगे ही नहीं और दिया भी तो अभी दस-पाँच वर्ष पीछे देखा जायेगा। यदि हमको भोजन की श्रद्धा हुई तो भोजन का बन्धान बाँध देंगे, नहीं यह नियत कर देंगे कि जो पाठशाला सम्बन्धी द्रव्य हो उसका वे सब मिलकर नास लिया करें।

उत्तर :

सन्दर्भ एवं प्रसंग- प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं।

लेखक ने सपने में अपना नाम संसार में बनाए रखने के लिए एक पाठशाला का निर्माण किया। उसमें अनेक विद्वान अध्यापक नियुक्त किए। ऐसी दुर्लभ पाठशाला के बनने पर उसने स्वयं को भाग्यशाली माना और लोगों से प्रार्थना की कि वे अपने बच्चों को पाठशाला में पढ़ने भेजें।

व्याख्या- लेखक सभी सत्पुरुषों से प्रार्थना करता है कि वे अपने बालकों को इस दुर्लभ पाठशाला में पढ़ने भेजें। इस पाठशाला में पढ़ने भेजने पर होने वाले खर्च से डरने की आवश्यकता नहीं है। पाठशाला के अध्यापकों को वेतन दिया ही नहीं जाएगा। फलतः विद्यार्थियों से शुल्क भी नहीं लिया जायेगा। यदि वेतन देना आवश्यक हुआ तो पाँच-दस सालों बाद इस बारे में विचार किया जाएगा। यदि अध्यापकों को भोजन कराने की श्रद्धा हुई तो भोजन का निर्धारण कर दिया जाएगा। यदि नहीं तो अध्यापकों से कह दिया जाएगा कि वे पाठशाला से सम्बन्धित धन को मिल-बाँट कर उपभोग करें।

विशेष-

1. गद्यांश की भाषा सरल और सुबोध है।
2. व्यंग्यपूर्ण शैली का प्रयोग हुआ है।
3. समाज के ऐसे लोगों पर व्यंग्य किया गया है जो विद्यालयों के धन का दुरुपयोग करते हैं तथा भ्रष्टाचार फैलाते हैं।

17. **लक्ष्मण-परशुराम संवाद** का कथासार अपने शब्दों में लिखिए। 6

उत्तर :

लक्ष्मण-परशुराम संवाद तुलसीदास की प्रसिद्ध रचना रामचरितमानस के **बालकाण्ड** से अवतरित है। सीता स्वयंवर हो चुका है। श्रीराम ने शिव-धनुष तोड़ दिया है। तभी महाक्रोधी परशुराम जनक दरबार में पधारे। शिव-धनुष को खण्डित देखकर वे क्रोधित हो गए। उन्होंने धनुष तोड़ने वाले को अपना शत्रु घोषित करते हुए मार डालने की धमकी दी। श्रीराम ने विनयपूर्ण वचनों से उनका क्रोध शान्त करना चाहा पर वे शान्त नहीं हुए। तब लक्ष्मण ने अपने व्यंग्यपूर्ण वचनों से उनके क्रोध को व्यर्थ बताया। लक्ष्मण ने श्रीराम को निर्दोष बताया और कहा-धनुष पुराना था, जो श्रीराम के छूते ही टूट गया। इस पर परशुराम अपने पराक्रम की डींग हाँकने लगे। स्वयं को क्षत्रिय कुलद्रोही कहने लगे। परशुराम बोले- "मैंने सहस्त्रबाहु को मार डाला था। धरती के सारे

सभी गुरुजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

क्षत्रियों को कई बार नष्ट कर डाला। इसलिए तू मेरे कठोर फरसे से डर।"

श्रीराम की विनय और विश्वामित्र के समझाने पर परशुराम जी ने श्रीराम की शक्ति की परीक्षा ली। तब कहीं जाकर उनका क्रोध शान्त हो पाया और वे श्रीराम को प्रणाम करके जनक-दरबार से चले गए।

अथवा

17. लक्ष्मण-परशुराम संवाद की भाषा की विशेषताएँ बताइए। 6

उत्तर :

तुलसी रससिद्ध कवि हैं। उनकी काव्य-भाषा रस की खान है। रामचरितमानस में उन्होंने अवधी भाषा का प्रयोग किया है। इसमें चौपाई-दोहा शैली को अपनाया गया है। उनकी भाषा सरल, सुबोध और मुहावरेदार है। उसमें यथा-स्थान लोकोक्तियों और सूक्तियों का भी प्रयोग हुआ है, जिसके कारण उनकी भाषा सजीव, प्रवाहपूर्ण और प्रभावशाली बन गई है। उदाहरण के रूप में लक्ष्मण-परशुराम संवाद के आधार पर निम्नलिखित प्रमाण दिए जा सकते हैं, जैसे-

मुहावरे-

चहत उड़ावन फूँकि पहारू-फूँक से पहाड़ उड़ाना

मुनिहि हरिअरई सूझ-हरा ही हरा सूझना।

लोकोक्तियाँ-

सूर समर करनी करहीं, कहि न जनावहिं आपु।

मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े। द्विज देवता घरहिं के बाढ़े।।

तुलसी की भाषा सर्वत्र भावों और विचारों की अभिव्यक्ति में समर्थ दिखाई देती है। प्रस्तुत संवाद में ओजगुण तथा व्यंजना शब्द-शक्ति की प्रधानता है। वीर रस की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। अलंकारों के सहज प्रयोग ने भाषा की सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए हैं, यथा-

अनुप्रास - न तो येहि काटि कुठार कठोरे।

वक्रोक्ति - अहो मुनीसु महाभट मानी।

उत्प्रेक्षा - तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा।

उपमा-

लखन उतर आहुति सरिस।

बढ़त देखि जल सम वचन बोले रघुकुलभानु।

भाषा में यथा-स्थान सूक्तियों का भी प्रयोग हुआ है, जो देखते ही बनता है।

वस्तुतः भाषा पर जैसा अधिकार तुलसीदास जी का है, वैसा और किसी भी हिन्दी कवि का नहीं है।

18. बच्चों में लालच एवं एक-दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ के साथ-साथ निश्छलता भी मौजूद होती है। कहानी से कोई दो प्रसंग चुनकर इस मत की पुष्टि कीजिए। 6

उत्तर :

बच्चों में खिलौने और मिठाई का अधिक लालच होता है। इस कारण मेले में सभी बच्चे खिलौने व मिठाई लेते हैं, परन्तु हामिद का मन ललचाने पर भी वह स्थिर रहा और चिमटा खरीद लाया। इस तरह वह अन्य बच्चों से अच्छी चीज खरीद कर आगे निकल गया था।

ईद के दिन बच्चों को जल्दी लगी थी कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। गाँव के लोग जब मेला देखने जा रहे थे, तो बच्चे दौड़कर आगे निकल जाते थे। वस्तुतः बच्चों में दूसरों से आगे रहने की होड़ रहती है। हामिद के साथियों ने खिलौने खरीदे तो वे अपने-अपने खिलौनों की प्रशंसा कर रहे थे। महमूद ने अपने सिपाही खिलौने की प्रशंसा की तो नूरे ने कहा कि **मेरा वकील खूब मुकदमा लड़ेगा।** हामिद मिठाई नहीं खरीद सका था तो उसने यह तर्क देकर मिठाई खरीदने वालों को पीछे छोड़ना चाहा कि **मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।** बालक हामिद के चिमटे की बुराई करने लगे तो हामिद ने कहा कि उसे कंधे पर रख लूँ तो बन्दूक हो गई। हाथ में ले लिया तो फकीरों का चिमटा हो गया। ऐसे तर्क देकर उसने यह सिद्ध कर दिया कि उसक चिमटा सबसे अच्छा है। तब बालसुलभ निश्छलता के कारण बच्चों ने अपने खिलौने देकर बदले में चिमटा देने के लिए हामिद से अनुरोध किया। चिमटे का उन पर ऐसा सिक्का जमा कि उनके पास और पैसे होते तो वे चिमटा खरीदते। इस प्रकार खिलौनों का प्रसंग बच्चों में विद्यमान होड़ की प्रवृत्ति को दर्शाता है। चिमटे से प्रभावित होने पर वे बिना दुर्भाव रखे हामिद से आग्रह करने लगे थे। यह प्रसंग उनकी निश्छलता की विशेषता को स्पष्ट करता है।

अथवा

18. बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। इस कथन में **बूढ़े हामिद** और **बालिका अमीना** से लेखक का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए। 6

उत्तर :

अमीना हामिद की बूढ़ी दादी थी। माता-पिता विहीन हामिद को वही प्यार देती थी। वही उसका पालन-पोषण कर रही थी। जब हामिद ईद के दिन ईदगाह के मेले में गया तब उसे चिंता थी कि वह कहीं भीड़ में गुम न हो जाए। हामिद मेले से अपने तीन पैसों से चिमटा खरीद लाया जो अमीना ने उसे खिलौने खरीदने के लिए, मेले में इच्छानुसार खर्च करने के लिए दिये थे। चिमटा खरीदकर लाये जाने पर अमीना चौंक उठी। उसने अपनी छाती पीट ली। वह गुस्से में आकर सोचने लगी कि यह कितना नासमझ लड़का है, जिसने दोपहर होने तक मेले में न कुछ खाया, न पिया। उसे खरीदने के लिए चिमटे के अतिरिक्त अन्य कोई चीज ही नहीं मिली। तब हामिद ने कहा कि रोटियाँ सेंकते समय तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने चिमटा खरीदा। हामिद के इस उत्तर से अमीना का क्रोध तुरन्त प्यार में बदल गया। तब अमीना को हामिद विवेकयुक्त प्रतीत हुआ। उसने सोचा कि इसने मेरे लिए कितना बलिदान किया है? वह रोने लगी। इस प्रकार थोड़ी देर पहले जो बूढ़ी अमीना गुस्सा कर रही थी, वही अमीना बालिका की तरह रो रही थी। उस समय बालक हामीद बड़े-बूढ़ों की तरह अपनी दादी को चुप कराने का प्रयत्न कर रहा था। इस तरह वह **बूढ़ा हामिद** और बुढ़िया **बालिका अमीना** बन गई थी।

19. तजि अंगार अघात से क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर :

चकोर पक्षी की यह प्रवृत्ति होती है कि वह अंगारे खाकर प्रसन्न होता है। अंगारे खाने से ही उसकी भूख शान्त होती है और वह तृप्त होता है। यदि कोई व्यक्ति चकोर को कपूर जैसा शीतल पदार्थ खाने को दे, तो वह नहीं खाता। कारण स्पष्ट है। खाना, पीना, पहनना और प्रेम करना, इन सबका आधार प्राणी विशेष का मन होता है। यदि कोई चकोर को कपूर खाने को देता है, तो भी वह अंगारों का त्याग नहीं करता। क्योंकि उसे अंगारे खाना ही अच्छा लगता है।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

20. श्रीकृष्ण को **ब्रज-मन्दिर** का दीपक क्यों कहा गया है? 2

उत्तर :

कवि ने **श्री ब्रज-दूल्ह** कृष्ण के लिए प्रयुक्त किया है। श्रीकृष्ण सम्पूर्ण संसार में सबसे सुन्दर, सजीले, उज्जवल और महिमावान हैं। जैसे मन्दिर में दीपक का प्रकाश सबको अपनी ओर आकर्षित करता है, उसी प्रकार कृष्ण की उपस्थिति से ही सारे ब्रज प्रदेश में आनन्द, उत्सव और प्रकाश फैल जाता है। इसी कारण इन्हें संसार रूपी मन्दिर का दीपक कहा जाता है।

21. **अभी न होगा मेरा अन्त** कविता को पढ़ने के पश्चात् आप अपने जीवन में क्या-क्या परिवर्तन लाने का निश्चय करेंगे? 2

उत्तर :

अभी न होगा मेरा अन्त कविता को पढ़ने के पश्चात् हम अपने जीवन में आशा, आस्था, विश्वास, उत्साह और जिजीविषा को बनाए रखेंगे और उत्साहपूर्वक दूसरों का हित करने के लिए तत्पर रहेंगे। मार्ग में आई बाधाओं से विचलित नहीं होंगे और स्वयं को कभी कमजोर महसूस नहीं करेंगे। दूसरों का हित या परमार्थ करने में हमें अपना सर्वस्व खोना भी पड़े तो हम तत्पर रहेंगे, पीछे नहीं हटेंगे।

22. पुस्तक-लेखन के विचार पर लेखक क्यों सहम गया? 2

उत्तर :

नाम अमर करने तथा यश प्राप्त करने के लिए लेखक ने पुस्तक-लेखन का विचार किया। परन्तु उस विचार के आते ही लेखक सोचने लगा कि पुस्तक प्रकाशित होते ही समालोचक रूपी कीड़े उसे काट-छाँटकर आधी से अधिक नष्ट कर देंगे अर्थात् आलोचना करने वाले पुस्तक में अत्यधिक कमियाँ निकालेंगे, अनेक दोष-दर्शन करेंगे। इससे पुस्तक-रचना का श्रम व्यर्थ चला जाएगा। इस विचार से लेखक पुस्तक-लेखन से सहम गया।

23. **अमर शहीद** एकांकी का मूल भाव एवं उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर :

अमर शहीद एकांकी में जैसलमेर के स्वतन्त्रता सेनानी सागरमल गोपा के बलिदान का वर्णन हुआ है। इसका मूल भाव स्वतन्त्रता सेनानियों के साहस, शौर्य, त्याग, देश-प्रेम तथा कष्ट-सहिष्णुता का परिचय देकर उनके बलिदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना है। इसका उद्देश्य देशवासियों में स्वतन्त्रता की भावना प्रबल बनाए रखना तथा देश-प्रेम के लिए त्याग-बलिदान की प्रेरणा देना है। इसका मुख्य उद्देश्य बलिदानी देशभक्त शहीदों के जीवन से परिचित होकर देश-सेवा का कर्त्तव्य निभाना तथा देश के लिए आत्मोत्सर्ग करने का महत्व बताना है।

24. दादूदयाल की शिष्य-परम्परा पर संक्षेप में प्रकाश डालिए। 2

उत्तर :

दादूदयाल के जीवन-काल में अनेक शिष्य बन चुके थे। दादू द्वारा अपने शिष्यों को एक सूत्र में पिरोने के विचार से साँभर में **परब्रह्म सम्प्रदाय** की स्थापना की गयी थी। प्रारम्भ में दादूजी के कुल एक सौ बावन शिष्य माने जाते हैं, इन शिष्यों के थांबे प्रचलित हुए। ये थांबे राजस्थान, हरियाणा और पंजाब में हैं तथा इन क्षेत्रों में विभिन्न स्थानों पर **दादू द्वारा** बने हुए हैं। दादू की शिष्य परम्परा में गरीबदास, रज्जब, बधना तथा सुन्दरदास अत्यंत प्रसिद्ध हुए।

25. शिव-धनुष भंग होने पर कौन कुपित हुआ? 1

उत्तर :

शिव-धनुष भंग होने पर परशुराम जी कुपित हुए।

26. **मुनिहि हरिअरइ सूझ** पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। 1

उत्तर :

इस पंक्ति का आशय है कि चारों ओर हरा-हरा ही दिखाई देना अर्थात् वास्तविकता को न समझना। परशुराम अब तक क्षत्रियों पर मिली विजय के घमण्ड में वास्तविकता को नहीं देखते हैं।

27. हामिद की दादी का नाम क्या था? 1

उत्तर :

हामिद की दादी का नाम अमीना था।

28. जतिन किस चीज की पढ़ाई कर रहा था? 2

उत्तर :

जतिन इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था।

29. गोस्वामी तुलसीदास का परिचय संक्षेप में लिखिए। 4

उत्तर :

गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति काव्यधारा के अग्रणी कवि है। इनका जन्म वि. संवत् 1589 में उत्तरप्रदेश के राजापुर गाँव (जिला बाँदा) में हुआ। अभुक्त मूल नक्षत्र में जन्म लेने से माता-पिता ने इन्हें त्याग दिया था। इस कारण इनका बचपन अत्यन्त कष्टपूर्ण रहा। ये रामबोला रूप में इधर-उधर भटकते रहे। बाबा नरहरिदास का आश्रय मिलने पर इन्होंने राम-भक्ति का मार्ग अपनाया। विद्याध्ययन के बाद गाँव आये और विवाह भी किया, किन्तु पत्नी के एक ताने से ये गृहत्यागी बन गये तथा चित्रकूट, अयोध्या व काशी में रहकर रामकथाश्रित ग्रन्थों की रचना करते रहे।

तुलसीदास ने दास्य भाव की भक्ति करते हुए अनेक काव्य-ग्रन्थों की रचना की, जैसे- रामचरितमानस, रामलला नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण, रामाज्ञा प्रश्नावली, वैराग्य सन्दीपनी, कवितावली, गीतावली, दोहावली, श्रीकृष्ण गीतावली तथा विनय-पत्रिका। इन्होंने अवधी भाषा के साथ ही ब्रज भाषा में भी काव्य-रचना की। इनके काव्यों में जीवन के विभिन्न आदर्शों एवं मानव-मूल्यों का समावेश हुआ है तथा हर क्षेत्र में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया गया है। इनकी भक्ति का मूल रूप लोक-संग्रह एवं लोक-मंगल की भावना रहा है। इनका निधन वि. संवत् 1680 में माना जाता है।

30. कथाकार के रूप में प्रेमचन्द की साहित्यिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर :

कथाकार एवं उपन्यासकार के रूप में मुंशी प्रेमचन्द का विशेष महत्व है। कथाकार के रूप में प्रेमचन्द की साहित्यिक विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं-

1. उन्होंने अपनी कहानियों में किसानों, दलितों, गरीबों और नारियों की वेदनाओं एवं कष्टों का वास्तविक चित्रण किया है।
2. प्रेमचन्द ने हिन्दी प्रदेश की जनता में निहित अंधविश्वासों, कुरीतियों, कुप्रथाओं और वर्ण-व्यवस्था आदि का वर्णन कर सामाजिक परिवर्तन की चेतना का विस्तार किया है।
3. प्रेमचन्द की कहानियों में जमींदारों एवं सामन्तों के शोषणकारी

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

कार्यकलापों और विलासी जीवन पर आक्षेप किया गया है तथा चरित्रगत उज्जवलता और मूल्यों की प्रतिष्ठा का स्वर व्यक्त किया गया है।

4. प्रेमचन्द ने समाज–सुधार तथा राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण विभिन्न उपन्यासों एवं कहानियों की रचना की है।

5. कथा–संगठन, चरित्र–चित्रण, उद्देश्य–निरूपण, मानवीय संवेदना तथा आदर्शों की स्थापना में प्रेमचन्द का साहित्यिक अवदान अनुपम माना जाता है।

□□□□□□□□

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com